Volume : 5 | Issue : 1 | JANUARY 2016 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

ykd lkfgR; ,o /keksa dk vr%LFk lg lac/k

An Internal Co-Relation Between Folk Literature and Religions

Literature

KEYWORDS :

Mk- 'kf'kdkr lkuo.k ^lkou* स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, प्रताप महाविद्यालय, अमलनेर उत्तर महाराष्ट्र विष्वविद्यालय, जलगॉव (भारत)

ABSTRACT

लोकसाहित्य एवं धर्म का प्राचीन सह संबंध है। दोनो एकदुसरों के आधार तथा मार्गदर्षक हैं। अतित के सामान्य असामान्य तथ्यों एवं भावनाओं को हर पीढ़ि में बनाए रखने का मौलिक कार्य दोनो करते हैं। फलतः दोनो के अंतःस्थ सह संबंधों से हर पीढ़ि तथा हर युग में मूल्य–आदर्षों की प्रतिश्ठापना बनी रहती है। नीतिमान तथा मानव्य केंद्रित जीवन जीने के ये दोनो भी मानदंड है। दोनो के पारस्पारिक मार्गदर्षन एवं सहयोग से ही व्यापक लोक में लोकमंगल बना है। लोकसाहित्य लोकरंजन को साथ लेकर, सामाजिक स्वास्थ्य को अत्याधिक स्वस्थ एवं सजीव बनाता है। धर्मो के तत्त्वों को रंजन और मंगल के माध्यम से लोकजीवन में चिरंतन बनाने का कार्य लोकसाहित्य करता है। ज्ञान–विज्ञान की अनेक षाखाओं की भांति लोकसाहित्य एवं धर्मों का पारस्पारिक संबंध व्यक्ति तथा समाज को सहजीवन का आनंद प्रदान करते हैं। लोकसाहित्य को धर्म का मूलाधार माना जाता है। धर्मों के नानाविध लोकविष्वास लोकसाहित्य की विविध विधाओं में प्रविश्ठ है। लोकगाथा, लोकनाट्य, लोककथा, लोकगीत जैसी सटीक और व्यापक झाकियों में इन्हें देखा–परखा जाता है। भारत तथा भारतेत्तर देषों में पाई जानेवाली बौद्ध धम्म की 547 जातक कथाऍं, धम्मपद की 423 गाथाऍं एवं 84 सिद्धों के चर्यापद तथा लोकवाणी पाली वैष्विक विरासत ठहरी है। हिंदू धर्म के वेद, पुराण, उपनिशद, षतपथ ब्राह्मणग्रंथ, रामायण, महाभारत, हितोपदेष, पंचतंत्र मुस्लिमों की अरेबियन नाईटस, आलिफ लैला, लैला–मजनू, जैनों की चोवीस तीर्थकरों की कहानियॉं, ईसाईयों के बाईबल की अद्भूत कथाऍं, सिक्खों की गुरुवाणी एवं राजाओं की कहानियॉं तथा आदिवासियों की गाथाऍं, लोकगीत एवं लोक परम्पराऍं इनकी लोकषैली के साथ धर्मवृत्ति पर भी प्रकाष डालते हैं। इस संदर्भ में सर स्टेथल वाल्टर स्कॉट, कर्नल टॉड, जे.एबर्ट, रिचर्ड टेम्पूल, डॉ.ग्रीयर्सन, डॉ.सुनितिकुमार, रामनरेष त्रिपाठी, नेमिचंद्र, हजारीप्रसाद, सांकृत्यायन, कृश्णचंद्र, कृश्णदेव आदि का कार्य विषेश उल्लेखनिय है।

लोक की भांति ही इसका साहित्य तथा धर्म प्राचीन है। लोक वाङ्मय और धर्म आदर्श जीवन प्रणाली के सह संबंधपूर्ण आधार स्तंभ हैं। मानवतापुर्ण जीवन शैली के ये सक्षम सामाजिक मानदंड भी हैं। एकदुसरों से ठोस संदर्भ ग्रहण करते हुए, ये मानवजाति का युगोयुगों से दिशादिग्दर्शन कर रहे हैं। व्यक्ति, समाज, राष्ट तथा विश्व के विकास एवं उत्थान में ये दोनो मील के पत्थर माने जाते हैं। न्याय, नीति, आदर्श एवं मूल्यों के आगार के रूप में समुचे विश्व में इनकी पहचान है। इनके पारस्पारिक सहयोग एवं अध्ययन से लोकप्रतिभा तथा लोकधर्म की नानाविध परते दिखाई देती है। फलतः इनका अध्ययन एवं अंतःस्थ सहसंबंध लोककल्याणकारी है। इनके युगानुबंधों के परिप्रेक्ष्य में एक विद्वान कहते हैं, ''धर्म का मूलाधार होते है लोकविश्वास। लोकविश्वासों की अमूल्य निधि लोकसाहित्य में सुरक्षित होती है। इसलिए धर्म गाथा, पुराण गाथा के लिए लोकसाहित्य अध्ययन से पर्याप्त सहायता मिलती है। इसके अध्ययन से लोकसाहित्य की अनेक गुत्थियॉं भी सुलझायी जा सकती है।''[1]

लोकसाहित्य और धर्म ऐसे दर्पण हैं, जिन में अपनी प्रतिमा के साथ पारस्पारिक प्रतिबिंब भी परिलक्षित होता है। परंपरागत लोकसाहित्य में नानाविध धर्मों एवं धर्माभिमान के संस्मरणिय संदर्भ मिलते हैं। ये संदर्भ सदियों से लोककंठ में सुरक्षित है। विविध धर्म संस्थापक, श्रेष्ठ धर्मानुयायी, धार्मिक विधियॉं, संस्कार, परंपराऍं, देवदेवता, सण–उत्सव, पर्व, मेले जैसी धार्मिक मान्यताऍं लोकसाहित्य में सुरक्षित है। लोकरंजन और लोकशिक्षण की धरातल पर मौखिक वाङ्मय में इसकी अभिव्यक्ति होती है। लोकसाहित्य विशेषतः धर्मों के आलोकमयी एवं लोक कल्याणकारी रूपों को अभिव्यक्त करता है। इस में धर्मो के आडंबर, विरोध, अवरोध, संकीर्णता, पाखंड आदि अवधारणाओं की भी अभिव्यक्ति होती है। मूलतः लोकोपयोगी लोकसाहित्य में धर्मो के धवल रूपों की झांकियॉं सर्वाधिक होती है। इस परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य विद्वान स्टेंथल ने जातिवाद को ही लोकगाथाओं का केंद्रीय उद्गम स्थल माना है। बिशप परसी, जोसिफ रिटसन, सर वाल्टर स्कॉट तथा प्रो.पॉल ने भी चारणवाद को लोकगाथाओं की प्रमुख प्रेरणा माना है। जातिवाद, चारणवाद, समुहवाद जैसे सिद्धांत धर्मो से संबंधित होने के कारण विविध धर्मों की लोकप्रतिभाओं के बलबुते पर लोक सा. हित्य साकार हुआ है। फलतः लोक साहित्य की निर्मिति एवं अभिव्यक्ति में धर्म की भूमिका मील के पत्थर की भांति है।

भारतीय धर्म तथा लोकसाहित्य पर पाश्चात्यों की भांति भारतीय भाषा एवं लोकविदों का कार्य उल्लेखनिय है। महापंडित राहूल सांकृत्यायन, रामनरेश त्रिपाठी, सुनितिकुमार चतर्जी, भोलानाथ तिवारी, बाबुराम सक्सेना, हजारीप्रसाद दि्वेदी, कृष्णचंद शर्मा, बलदेवसिंह उपाध्याय, सत्या गुप्ता, नेमिचंद जैन, नगेंद्र जैसे कुछ चुनिंदा अनुसंधानकर्ताओं ने लोकसाहित्य एवं धर्म के विविध आयामों की प्रस्तुत किया है। धर्म अपने आसन से उतरकर जब जब लोकसाहित्य में प्रविष्ठ हुआ तब तब वह अधिकाधिक लोकोपयोगी बनता गया। धर्म में वर्णित विशिष्ठ नियम तथा मर्यादाऍं लोकस्पर्श से अधिकाधिक सौम्य होते गए। विशाल और विराट लोक में धर्म की प्रतिमा और भी धवल होती गई। इस संदर्भ में एक भारतीय विद्वान कहते हैं, ''किसी जाति के धार्मिक जीवन का पता भी लोकसाहित्य से लगता है। लोकगीतों में गंगा, तुलसी, शितला तथा षष्ठि माता का गायन हुआ है। ग्रामिण जनों की पूजा में जो विधि विधान संपादित किए जाते हैं, उनका संपुर्ण वर्णन लो. कगीतों में पाया जाता है। धर्म और नीति की शिक्षा देने में लोककथाओं का बड़ा महत्त्व है।''[2]

बौद्ध धम्म भारत का बुनियादि दर्शन है। अतित में लंबे समय तक भारत का अधिकतर प्रदेश पूर्णतः बौद्धमय था। शांति, करूणा एवं मानवता का महान संदेश देनेवाला बौद्ध धम्म लोक एवं लोकसाहित्य के कारण विश्व के अनेक देशों में जा पहुँचा। बौद्ध धर्म एवं लोकसंस्कृति की गरिमा को आलोकित कराते एक विद्वान कहते है, ''भारतीय संस्कृति देश की सीमा के बाहर प्रायः बौद्ध धर्म के साथ गई। इस विस्मृत संबंधों को फिर से सामने रखने में बौद्ध धर्म के ज्ञान ने हमारी बडी सहायता की है।''[3]

लोकसाहित्य में धार्मिक संदर्भों की अभिव्यक्ति लोकगाथाओं के माध्यम से सर्वाधिक होती है। इन गाथाओं का स्वरूप गद्य–पद्य युक्त संगीतमय होता है। अभिनय के माध्यम से धर्म के विशिष्ठ संदर्भों की व्यापक झांकियॉं इस में होती है। महाराष्ट के लोकराजा शिवाजी के पवॉडे, अम्बेडकरी जलसे एवं शाहिरी, नवनाथों के भराड, लोकराजा एवं देवता मल्हारी का जागरण आदि धर्म और लोकसाहित्य के समन्वय की मिसाले है। लोकगाथाओं की भांति लोकगीत, नाट्य तथा प्रकीर्ण साहित्य द्वारा भी धर्म विशेष संदर्भों की अभिव्यक्ति होती है। भारतीय बौद्ध धर्म के विशाल एवं वैश्विक लोकसाहित्य से प्रभावित होकर एक अभ्यासक कहते ने कहा है, ''बुद्ध काल में प्रचलित कुल 547 लोककथाओं का संग्रह है जातक। जातक की गाथाऍं प्राचीन है। उस में लोककाव्य भी है। जातक विश्वसाहित्य की अद्भुत निधि है। यह बौद्ध देशों में लोकप्रिय तो है ही, किंतु अब शायद ही विश्व की कोई ऐसी साहित्यिक भाषा बची होगी, जिसमें जातक का अनुवाद हुआ न् हो।''[4]

वैश्विक बौद्ध धर्म एवं लोकसाहित्य अंतःस्थ सह संबंधों के पश्चात संत साहित्य में तुकाराम के अभंग, नानक एवं नामदेव के पद, कबीर तथा रैदास के दोहे, महात्मा फुले के अखंड गाड्गेबाबा एवं तुकडोजी के कीर्तन आदि ने धर्म और लोक में समन्वय स्थापित कर सदधम्म के दर्शन कराने का प्रयास किया। नाथवाणी, सिद्धों के चर्यापद, हिंदुओं के चारण एवं रासो काव्य, सिक्खों की गुरुमुखी तथा शब्द–किर्तन, जैनों के प्राकृत वचन, मुस्लीमों का सुफी दर्शन, ईसाईयों की सेवा तथा चमत्कार की बातें आदि सब धर्म एवं लोकसाहित्य के अंतःस्थ दृढ सह संबंधों की सक्षम अभिव्यक्ति है। हिंदुओं के वेदपुराण, उपनिषद, शतपथब्राह्मण ग्रंथ, रासोकाव्य, पंच तंत्रीय कथाऍं, हितोपदेश, इसापनीति, रामायण, महाभारत तथा भगवत्गीता जैसे धार्मिक ग्रंथ 'लोक' से अछुते नही है। इन ग्रंथों में नानविध कथाऍं तथा गीत, सुभाषित, लोकोक्तियॉं मिलती है। राजा भरथरी, राजा हरिश्चंद्र–तारामती, नील–दमयंति, दुष्यंत–शकुंतला, कुंती–सूर्य, द्रौपदी–पांडव, सीता–राम, राधा–कृष्ण, सत्यवान–सावित्रि महाराणा प्रताप–संयोगिता जैसे विविध संदर्भ हिंदुधर्म के दायरे को लोकसाहित्य में प्रस्तुत करने का कार्य करते हैं। मुस्लिम धर्म के आलिफ लैला, अरेबियन नाईटस्, लैलामजनू, अलिबाबा, सिंदबाज जैसे संदर्भ धार्मिक मान्यताओं को लोकसाहित्य में अभिव्यक्त करते है। सिख धर्म की गुरूवाणी, हिररांझा की गाथा, तेग बहादूर सिंग जैसे अनेक राजाओं की कथाऍं धार्मिक गौरव को लोक में प्रस्तुत करती है। जैन धर्म के चोवीस तीर्थकारों की कथाऍं, प्राकृतवाणी के वचन तथा राजाओं के चरित्र लोकसाहित्य का केंद्र बने है। ईसाईयों धार्मिक ग्रंथ बाईबल की समुची अद्भुत कथाऍं भारतीय तथा भारतीयेत्तर लोकसाहित्य को प्रभावित करती रही है। येशु का जन्म, कार्य, अंतिम भोजन, देहांत, पूनर्जीवन जैसे मुख्य घटनाओं से जुड़े सिंड्रेला जैसे अनेक संदर्भ धर्म और लोकसाहित्य के संबंधों को दृढ कराते हैं। भारतीय मूलनिवासी आदिवासी लोकसंस्कृति के घोटूल, भोंग–या बजार, गुदना, वारली, वाघदेव, हिरदेशा, महुआ मॉंझी, गुदड, गुलाल्या, एकलव्य, शंबूक, शबरी, रावण, मंदोदरी जैसे नानाविध संदर्भ आदिम सभ्यता और साहित्य को आलोकित करते है।

धर्म और लोकसाहित्य के इन अंतःस्थ सहसंबंधों पर भारत में मौलिक अनुसंधान हुआ है। लोक और धर्म पर सर्व प्रथम हुए शोधकार्यों में उल्लेखनिय है – सन 1829 में कर्नल टॉड का राजस्थानी गाथाओं पर आधारित 'ॲनल्स ॲड एन्टिक्विटीज् ऑफ राजस्थान', सन 1854 में रॉयल एशियाटिक सोसायटी का 'पंजाबी लोकगाथा', सन 1866 में सर रिचर्ड टेम्पूल का 'मध्यभारत के आदिवासी लोकसाहित्य पर कार्य', सन 1868 में मिस फ्रेंजर का दक्षिण भारत की लोककथाओं पर आधारित 'ओड डेकन डेज' तथा सन 1861 में किया चार्ल्स ई.ग्रोव्हर का भारतीय लोकगीतों पर आधारित प्रथम शोधकार्य 'फोक सॉंग्स ऑफ सदर्न इंडिया' । इनके बाद धर्म तथा लोक के पारंपारिक संबंधों की खोज पर भारतीय अध्येताओं की शृंखला आरंभ हुई जो आज तक जारी है। आदिवासी धर्म एवं लोकसाहित्य पर भारत में प्राचीन समय से आधुनिक काल तक सर्वाधिक शोधकार्य हुए हैं। आदिम धर्म एवं साहित्य का दायरा भारत तथा भारतेत्तर देशों में सर्वाधिक है। आदिम समाज एवं सभ्यता का क्षेत्र आज भी अनुसंधान के लिए चुनौतियों से ओतप्रोत है। इसलिए आज भी भारत की इस बुनियादी लोकसंस्कृति के लोकविश्वास, सभ्यता एवं संस्कार भारतीय जीवन शैली की उज्वल कीर्ति पताका ठहरे हैं।

Volume : 5 | Issue : 1 | JANUARY 2016 • ISSN No 2277 - 8179

REFERENCE

1) पृष्ठसंख्या – 30, 'लोकसाहित्य : सिद्धांत और प्रयोग', डॉ.श्रीराम षर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण – सन 1981 2) पृष्ठसंख्या – 255, 'लोकसाहित्य की भूमिका', डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – सन 1957 3) प्राक्कथन, दि.27/12/1952, 'बौद्ध संस्कृति', राहूल सांकृत्यायन, कौषल्य प्रकाषन, औरंगाबाद, प्रथम संस्करण – सन 1981 4) पृष्ठसंख्या – 124, 'त्रिपिटक परिचय – महापंडित राहूल सांकृत्यायन', मराठी अनुवाद – इ.मो.नारनवरे, संकेत प्रकाषन, नागपुर, प्रथम संस्करण – सन 2007